ज्ञान शांति मैत्री

हिंदी विश्व

www.hindivishwa.org

निजी प्रसार हेतु
वर्धा : 30 जून, 2017

वर्ष-4 अंक-6 वर्धा : जनवरी-जून, 2017 महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की समाचार पत्रिका

प्रौद्योगिकी से ही होगा हिंदी का विकास – प्रभास कुमार झा

हिंदी को बाजार, व्यवसाय एवं रोज़गार की भाषा बनाने के लिए नई–नई प्रौद्योगिकी का सहारा लेना चाहिए। हिंदी को जन–जन की भाषा बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक दोहन कर उसे विश्व पटल पर ले जाना आवश्यक है। उक्त विचार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव प्रभास कुमार झा ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय (19 से 21 मार्च) अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने की। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, राजभाषा अधिकारी राजेश कुमार यादव, सहायक प्रोफेसर डॉ. राकेश मिश्र मंचासीन थे। प्रभास कुमार झा ने हिंदी के विकास को लेकर विश्वविद्यालय के की ओर से प्रौद्योगिकी के उपयोग की सराहना की और कहा कि हिंदी का सही मायनों में विकास करना है तो उसे प्रौद्योगिकी से जोड़ना होगा। विभिन्न प्रकार के एप्स, सॉफ्टवेयर और कार्यक्रम तैयार कर उसे मोबाईल और इंटरनेट के माध्यम से लोंगो के उपयोग की भाषा बनाना होगा। अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. मिश्र ने कहा कि हिंदी एक महासागर है और अन्य भारतीय भाषाएं नदियों के समान है। हमें सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर हिंदी का विकास करना चाहिए। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि हिंदी अन्य भाषाओं के शब्दों से समृद्ध हुई है। प्रौद्योगिकी की मदद से हिंदी के अलख को विश्वभर में जगाने के लिए कृत संकल्पित होने की आवश्यकता है। इस दौरान मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो.मनोज कुमार, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, भाषाविद् व हिंदी साहित्यकार डॉ. विमलेश कांति वर्मा, केंद्रीय लेखा परीक्षा, मुंबई के प्रधान निदेशक गुलजारी लाल, राजभाषा अधिकारी राजेश यादव ने भी संबोधित किया।

इस वर्ष से होगी बी.ए. ऑनर्स की भी पढ़ाई

विश्वविद्यालय में इस वर्ष अनेक नए पाठ्यक्रमों की पढ़ाई होगी जिसमें मुख्य रूप से बी.ए. ऑनर्स भी शामिल है। हिंदी, अंग्रेजी, भाषाविज्ञान, पत्रकारिता और मनोविज्ञान आदि विषयों में बी.ए. ऑनर्स का अध्ययन होगा। गौरतलब है कि विश्वविद्यालय में एम.ए., एम.बी.ए., एम.एड., एम.एस.डब्ल्यू., बी.एड., एम.एड.(एकीकृत) बी.वोक. की पढ़ाई पहले से हो रही है। इनमें भाषा प्रौद्योगिकी, इंफॉर्मेटिक्स एंड लैंग्वेज इंजीनियरिंग, हिंदी साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, प्रयोजनमूलक हिंदी एवं भाषा प्रबंधन, उर्दू, मराठी, अंग्रेजी, संस्कृत, मास्टर ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स (फिल्म एवं नाटक), गांधी एवं शांति अध्ययन, स्त्री अध्ययन, दलित एवं जनजातीय अध्ययन, बौद्ध अध्ययन, अनुवाद अध्ययन, प्रवासन तथा डायस्पोरा अध्ययन, जनसंचार, मानवविज्ञान, एमएसडब्ल्यू, शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान में एम.ए. तथा एमबीए, बी.एड., एम.एड. पाठ्यक्रमों का अध्ययन शामिल हैं। यहां एम.ए. के अलावा एम.फिल., पीएच.डी., डिप्लोमा, पी.जी. डिप्लोमा, एडवांस्ड डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट के भी पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों को एक भारतीय या विदेशी भाषा भी पढ़ाई जाती है इसके साथ कंप्यूटर में दक्ष किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए विवि की वेबसाइट www.hindivishwa.org पर देखा जा सकता है या विवि के टोल फ्री. नंबर 18002332141 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

नए संकाय सदस्य

1. डॉ. अवधेश कुमार, प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
2. डॉ. अखिलेश कुमार दुबे, प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
3. डॉ. हर्षलता जगदीश पेटकर, सहायक प्रोफेसर, कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान विभाग
4. डॉ. संदीप कुमार, सहायक प्राफेसर, फ्रेंच भाषा, विदेशी भाषा एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र
5. डॉ. राकेश सिंह फकलियाल, सहायक प्रोफेसर, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर सिदो–कान्हू मुर्मू दलित एवं जनजातीय अध्ययन केंद्र

आवासीय लेखक

विश्वविद्यालय में एक अनूठी संकल्पना के तहत आवासीय लेखक 'राइटर–इन–रेजीडेंस' का उपक्रम है, जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय परिसर में अकादमिक और सांस्कृतिक वातावरण को विकसित करना है। विश्वविद्यालय में साहित्य, कला एवं संस्कृति के ख्यातनाम विद्वानों को आवासीय लेखक/अतिथि अध्येता के रूप में आमंत्रित किया जाता है। आवासीय लेखक : 1. डॉ. सूर्यबाला (कथाकार), 2. महेश कटारे (कथाकार), अतिथि अध्येता : 1. नारायण कुमार (राजभाषा विशेषज्ञ), 2. डॉ. शंकर लाल पुरोहित (साहित्यकार)।

पर्यावरण संरक्षण की अभिनव पहल

पर्यावरण संवर्धन और संरक्षण को लेकर विश्वविद्यालय और वर्धा जिला प्रशासन ने सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में कदम बढ़ाते हुए एक महत्त्वाकांक्षी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय का कबीर हिल परिसर हराभरा करने का संकल्प लिया है। इसे मूर्त रूप देने के कार्य का प्रारंभ 21 अप्रैल को जिलाधिकारी शैलेश नवाल और विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव कादर नवाज़ खान तथा वर्धा के डॉक्टरों का संगठन 'वैद्यकीय जागरूकता मंच' के पदाधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। इस परियोजना के लिए विश्वविद्यालय ने अपनी ओर से 22 लाख 73 हजार रुपये की वित्तीय मदद दी है। परियोजना के अंतर्गत लगभग पांच से अधिक एकड़ भूमि पर दस हजार से अधिक पौधे लगाए जाएंगे तथा वे जीवन प्राधिकरण के जलशुद्धिकरण केंद्र से अनावश्यक बहने वाले पानी से सालभर हरे–भरे रह सकेंगे। इन पौधों को इस प्रकार रोपा जाएगा जिससे बढ़ने पर वे तीन रंगों यानी 'तिरंगे' की शक्ल में नज़र आएंगे।

'एक शाम लखनऊ के नाम'

विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में जनसंचार विभाग के पीएच.डी. शोधार्थी हिमांशु वाजपेयी ने यादगार बना दिया। मौका था जनसंचार विभाग की तरफ से आयोजित 'एक शाम लखनऊ के नाम' कार्यक्रम का। देश–विदेशों में दास्तानगोई को प्रस्तुत करने के लिए मशहूर हिमांशु वाजपेयी ने अपने चिरपरिचित अंदाज में अनेक किस्से सुनाकर उपस्थितों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने लैला–मजनू से लेकर इस्मत चुगताई, मंटो, अली सरदार जाफरी, प्रेमचंद और अनेक साहित्यकारों का जिक्र करते हुए उनसे जुड़े किस्से सुनाए। उन्होंने लखनऊ से जुड़े कई दास्तान सुनाए। मीर, गालिब व अन्य उर्दू शायरी में भी उन्होंने कई मशहूर हस्तियों के किस्से और शायरी सुनाई। कार्यक्रम के प्रारंभ में इप्टा के राष्ट्रीय महासचिव राकेश ने दास्तानगोई और लखनऊ का परिचय दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने वाजपेयी की प्रशंसा करते हुए उनके हुनर की तारीफ की। कार्यक्रम के आयोजक जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपाशंकर चौबे ने प्रस्तावना रखी।

मॉरिशस व हिंदी का अंतर्संबंध

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

मॉरिशस के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार राज हीरामन ने कहा है कि मॉरिशस में हिंदी वोट और नोट की भाषा है। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'मॉरिशस व हिंदी का अंतर्संबंध' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि मॉरिशस में भारतीय मूल के लोगों के लिए हिंदी मां है और भोजपुरी नानी। मॉरिशस में हिंदीवालों की आबादी अधिक है इसीलिए सत्ता में उनकी भागीदारी है। हिंदी जाने बगैर वहां सत्ता नहीं हासिल की जा सकती। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि कहीं और से हिंदी भले चली जाए, मॉरिशस में रहेगी। मॉरिशस के दिल में हिंदी ने अपनी जगह बनाई है। भारत भी हिंदी के बगैर नहीं रहेगा। इस दौरान डॉ. सत्यप्रकाश तिवारी, पूजा शुक्ल तथा मदालसा मणि त्रिपाठी ने भी संबोधित किया। विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण किया।

'हिंदी में भाषा प्रयोग' पर कार्यशाला

विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा 'हिंदी में भाषा प्रयोग (उच्चारण एवं लेखन)' विषय पर दो दिवसीय (30–31 जनवरी) कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा एवं भाषा विज्ञान के पूर्व अध्यक्ष प्रो. उमाशंकर उपाध्याय द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ. शोभा पालीवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यशाला में भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पांडे ने 'हिंदी की ध्वनि एवं लिपि संरचना', भाषा विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. उमाशंकर उपाध्याय ने 'मानक हिंदी, वर्तनी का प्रयोग और वर्तनी गत अशुद्धियाँ, समस्या एवं निराकरण', भाषा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष डॉ. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने 'हिंदी भाषा की व्यावहारिक समस्याएं' विषय पर चर्चा की। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि शब्दों का सही उच्चारण और लेखन भाषा के विकास के लिए आवश्यक है। यह कला और विज्ञान दोनों के अंतर्गत आता है। हिंदी भाषा के शब्दों को उसके मानक रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मिश्र द्वारा वाक्य विन्यास की दृष्टि से सही लेखन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

गणतंत्र दिवस

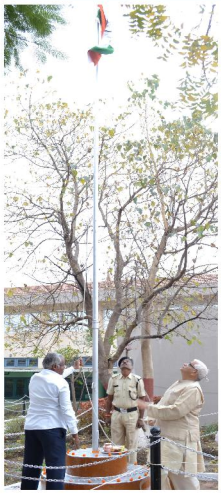

गणतंत्र दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय प्रशासनिक भवन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने ध्वजारोहण किया। विश्वविद्यालय परिवार को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए प्रो. मिश्र ने कहा कि यह दिवस हमें उन महापुरुषों के बलिदानों की याद दिलाता है जिन्होंने देश को आज़ादी दिलाई। बाबासाहेब अंबेडकर ने समतामूलक समाज के निर्माण के लिए एक अमूल्य दस्तावेज़ के रूप में भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार किया। हमें देश व समाज के हित में कार्य की संस्कृति को अपनाने की ज़रूरत है। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, शिक्षा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. अरबिंद झा तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, गैर–शेक्षणिक कर्मी, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कुलपति ने झंडोत्तोलन के पहले गांधी हिल स्थित गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया।

प्रस्तावित नए विभाग

- समाजशास्त्र विभाग
- राजनीतिशास्त्र विभाग
- इतिहास विभाग
- भूगोल एवं पर्यावरण अध्ययन
- पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग
- संगीत विभाग
- भारत अध्ययन केंद्र
- अरबी, रशियन, पुर्तगीज़ अध्ययन
- दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग
- उत्तर–पूर्वी भाषा और संस्कृति विभाग

प्रो. कौल द्वारा कोरिया में अध्यापन

विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र (भाषा विद्यापीठ) में निदेशक के पद पर कार्यरत प्रो. विजय कुमार कौल ने हांकुक यूनिवर्सिटीज़ ऑफ फॉरेन स्टडीज, ग्लोबल कॅम्पस, सियोल, कोरिया में एक वर्ष (मार्च, 2016 से फरवरी, 2017) तक अध्यापन कार्य किया। इस दौरान उन्होंने हिंदी भाषा, संस्कृति पर अध्यापन तथा शोध कार्य करवाया।

भाषान्तरकारों के प्रशिक्षण पर विदेश मंत्री ने की चर्चा

माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने म.गां.अं.हिं.वि. के कुलपति, विदेशी भाषा के प्राध्यापकगणों तथा विद्यार्थियों के साथ विदेश मंत्रालय में एक बैठक की जिसमें विदेशी भाषाओं के अध्ययन एवं हिंदी माध्यम से अनुवाद, द्विभाषिया एवं भाषांतर कार्य की आवश्यकताओं को लेकर चर्चा की। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने बताया कि विदेश मंत्रालय को हिंदी माध्यम से विदेशी भाषा के अनुवादक, दुभाषिया एवं भाषांतरकारों की अत्यन्त आवश्यकता है। बैठक के दौरान भविष्य में विश्वविद्यालय में अरबी एवं रूसी भाषा का पाठ्यक्रम शुरु करने का एक प्रस्ताव रखा गया। कुलपति प्रो. मिश्र ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय में आवश्यक सुविधाओं के बारे में चर्चा की जिसके प्रत्युत्तर में विदेश मंत्री ने मदद के लिए आश्वासन दिया। इस अवसर पर विदेश मंत्रालय के अतिरिक्त विदेश सचिव एस. जयशंकर, संयुक्त सचिव राकेश वैष्णव, ओ. एस.डी (हिंदी) तथा विश्वविद्यालय के अनिर्बाण घोष (सहायक प्रोफेसर, चीनी), सन्मति जैन (सहायक प्रोफेसर, जापानी), सन्दीप कुमार (सहायक प्रोफेसर, फ्रेंच) के अलावा कुल 8 विद्यार्थी–रंजीत कुमार, पियूष गाड़े, श्रद्धा गजभिए, वंदना रामटेके, प्रयाग माने, कपिल मुंजेवार, दर्शना धाबलिया एवं दिव्या गुप्ता उपस्थित थे।

संस्कार देता है सामाजिक उत्तरदायित्व की सीख : शैलेश नवाल

राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस का आयोजन

जीवन में सफल होने के लिए होड़ लगी है। विद्यार्थी भी इस दौड़ में शामिल हैं कि सफल जीवन के क्या तरीके हो सकते हैं। सफल होने का एकमात्र मंत्र यह है कि हम अपने मौलिक कर्तव्य एवं संस्कार के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की सीख लें। उक्त विचार वर्धा के जिलाधिकारी शैलेश नवाल ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की ओर से 'विद्यार्थियों की सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन में जिला प्रशासन की भूमिका एवं चुनौतियां' विषय पर विशेष व्याख्यान में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने की। इसी दौरान राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस भी मनाया गया जिसका विषय था 'राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति हमारा दायित्व'। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रतिकुलपति प्रो.शर्मा ने कहा कि सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए सजगता जरूरी होती है। अत्यंत विषम और प्रतिकुल परिस्थितियों में हमारे सैनिक देश की रक्षा के लिए कार्य करते हैं, हमें उन्हें नमन करना चाहिए और उनके प्रति आदर का भाव रखना चाहिए। कार्यक्रम में कुलसचिव कादर नवाज़ खान, शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार राय, जिला सूचना अधिकारी मनीषा सावले ने भी विचार रखे। इस अवसर पर पब्लिक रिलेशन्स सोसायटी की ओर से राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस विशेषांक का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जिला सूचना अधिकारी मनीषा सावले का उत्कृष्ट जनसंपर्क अधिकारी के रूप में पीआरएसआई की ओर से शॉल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। शिक्षा विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर ऋषभ कुमार मिश्र ने संचालन किया तथा जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे ने आभार माना।

स्वामी विवेकानंद जयंती

स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर 'डिजिटल भुगतान : उज्वल भविष्य की ओर एक क़दम' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान अध्यक्षीय उदबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि विमुद्रीकरण से नई आर्थिक संस्कृति का विकास हो रहा है। इससे आर्थिक परिवर्तन के साथ आर्थिक सुचिता और व्यवहार में पारदर्शिता भी आ रही है। विमुद्रीकरण से सांस्कृतिक बदलाव का नया दौर आया है और प्रगति का नया रास्ता बन रहा है। इस दौरान बैंक ऑफ इंडिया, हिंदी विवि शाखा के प्रबंधक रणविजय कुमार, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के अक्षय फडणवीस, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, वर्धा शाखा के प्रबंधक देवानंद तथा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में कुलपति प्रो. मिश्र ने स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तथा अतिथियों ने पुष्प अर्पण कर अभिवादन किया। कार्यक्रम का संचालन जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने किया।

'स्त्री के पक्ष में : सृजनात्मक प्रतिरोधी स्वर' पर परिसंवाद

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग द्वारा 'स्त्री के पक्ष में : सृजनात्मक प्रतिरोधी स्वर' विषय पर आयोजित चार दिवसीय (05–08 मार्च) राष्ट्रीय परिसंवाद के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि आज के दौर में महिलाओं के प्रति सामाजिक वातावरण बिगड़ रहा है। उनके प्रति हिंसा और शोषण की घटनाएं सशक्त समाज के लिए अच्छा संकेत नहीं है। ऐसे में स्त्री–पुरुष के रिश्तों का विवेक विकसित करने की जरुरत है। उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों को परिभाषित करते हुए कहा कि दोनों के चारित्रिक दृढ़ता में परिपक्वता लाने के लिए हमें प्रयास करने की जरुरत है। इस अवसर पर जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन केंद्र की अध्यक्ष डॉ.लता सिंह, कवि नीलेश रघुवंशी, भोपाल, जाने–माने कार्टूनिस्ट गोपाल नायडू, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक तथा सहायक प्रोफेसर डॉ. अवंतिका शुक्ला ने विचार व्यक्त किए। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि स्त्री विमर्श को समाज के अंतिम व्यक्ति तक ले जाने की आवश्यकता है। गालिब सभागार में आयोजित समापन समारोह में दूरदर्शन केंद्र, नई दिल्ली की अतिरिक्त महानिदेशक दीपा चंद्रा, सुप्रसिद्ध कथाकार सूर्यबाला, मगन संग्रहालय, वर्धा की निदेशक डॉ.विभा गुप्ता, परिसंवाद की समन्वयक, स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ.सुप्रिया पाठक तथा सहायक प्रोफेसर डॉ.अवंतिका शुक्ला मंचासीन थीं। समापन समारोह में मगन संग्रहालय, वर्धा की निदेशक डॉ.विभा गुप्ता तथा दूरदर्शन केंद्र, नई दिल्ली की अतिरिक्त महानिदेशक दीपा चंद्रा को प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा द्वारा 'स्त्री शक्ति सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक लिखित 'रंगमंच एवं स्त्री' पुस्तक का लोकार्पण मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्त्री शक्ति पर आधारित शुभा मुदगल की फिल्म का प्रदर्शन किया गया। चार दिवसीय आयोजन में गोपाल नायडू, नागपुर के निर्देशन में पोस्टर निर्माण कार्यशाला ली गई जिसमें विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भागीदारी की। अकादमिक सत्रों में प्रतिरोध का सिनेमा : स्त्रियों की नज़र से', 'नाटक में अभिव्यक्ति के प्रतिरोधी स्वर', 'साहित्य में अभिव्यक्ति के प्रतिरोधी स्वर' विषयों पर चर्चा की गई। तीन समानांतर सत्रों में भी विमर्श किया गया। फिल्म प्रदर्शन और चर्चा के साथ सुप्रसिद्ध अभिनेत्री असीमा भट्ट ने 'द्रौपदी' नाटक की एकल नाट्य प्रस्तुति दी तथा पूर्वा भारद्वाज एवं साथी कलाकारों ने 'हम खवातीन' नाटक प्रस्तुत किया। विभिन्न सत्रों में प्रो. अरूण कुमार त्रिपाठी, स्मिता राजुरकर, फिल्म समीक्षक डॉ. विजय शर्मा, विश्वभारती शांतिनिकेतन के मृत्युंजय प्रभाकर, एनडीटीवी इंडिया, दिल्ली के डॉ. अमितेश कुमार, मिहिर पांडया, सोमा सेन, पी.के. मंगलम, डॉ.सुधा सिंह, वंदना राग आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। सत्रों में कई शोध आलेख भी पढ़े गए।

मातृभाषा दिवस

विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से आयोजित मातृभाषा दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि भाषा सत्ता और अस्तित्व को परिभाषित करती है। भाषा में अपार क्षमताएं होती हैं, उन क्षमताओं का संवर्धन करना जरुरी है। विवि के गालिब सभागार में 21 फरवरी को आयोजित समारोह में प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, आवासीय लेखक नारायण कुमार, भाषा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, साहित्य विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह, भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष तथा कार्यक्रम निदेशक डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय, भाषा विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनिल दुबे ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर निबंध लेखन, पेंटिंग, वक्तृत्व, गायन, नृत्य, कविता पाठ तथा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

उद्यमिता विकास पर संगोष्ठी

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सामुदायिक महाविद्यालय में 'खादी और वस्त्रोद्योग में उद्यमिता विकास' विषय पर 25 एवं 26 फरवरी को संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मगन संग्रहालय, वर्धा की डॉ. विभा गुप्ता, महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम के डॉ. उल्हास जाजू और विवि के प्रो. मनोज कुमार, प्रो.देवराज ने संबोधित किया। अकादमिक सत्रों में डॉ. पुष्पेंद्र दुबे, इंदौर, बलवंत ढगे, वर्धा, प्रो. संदीप के. सोनी, यवतमाल, एस.एस. पठान, हिंगनघाट, अतुल शर्मा, वर्धा, डॉ.अंजनी कुमार सिंह, दिल्ली, विवेक सक्सेना, हिंगनघाट, प्रो.मनोज एम. राय, नागपुर, राहुल गजभिये, केवीआईसी, नागपुर, किशोर भाई, निवेदिता निलयम, वर्धा, सुबास एस. नायर, के.सी. जयकृष्णन, केरल, मनीषा ताई तथा सामुदायिक महाविद्यालय के नोडल अधिकारी डॉ.मनोज कुमार राय ने उपस्थितों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर डिप्लोमा इन टेक्सटाईल टेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया और साथ ही खादी वस्त्र का फैशन शो भी किया गया।

'हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध और शमशेर' पर संगोष्ठी

विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग की ओर से 'हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध और शमशेर' विषय पर आयोजित दो दिवसीय (24 एवं 25 मार्च) राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि आज के समय में हिंदी कविता को समझने के तेवर भी बदल गए हैं। दोनों कवि अपनी कविता में सच की लड़ाई के लिए संघर्ष करते हैं और साथ ही सच की खोज भी करते हैं। भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक तथा नया ज्ञानोदय के संपादक लीलाधर मंडलोई ने बीज वक्तव्य दिया। इस दौरान शमशेर रचनावली की संपादक प्रो.रंजना अरगड़े, अहमदाबाद, वरिष्ठ साहित्यकार प्रो.सरजू प्रसाद मिश्र, नागपुर, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. के.के.सिंह, संगोष्ठी की संयोजक डॉ.प्रीति सागर तथा सहसंयोजक डॉ.रामानुज अस्थाना ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर विद्यार्थियों की भित्ति पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का लोकार्पण प्रो. सरजू प्रसाद मिश्र द्वारा किया गया। संगोष्ठी के दूसरे दिन 'कवि शमशेर की वैचारिक भूमि' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रो.रंजना अरगड़े ने की। इस सत्र में डॉ.आशा मेहता, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ.जयलक्ष्मी, नवल किशोर दुबे, डॉ. मनोज तिवारी बतौर वक्ता के रूप में उपस्थित थे। 'शमशेर की कविता और चित्रकला का अंतःसंबंध एवं इंद्रिय बोध' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता विवि के प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा ने की। इस सत्र में प्रो.वशिष्ठ अनूप, डॉ.रामानुज अस्थाना, लीलाधर मंडलोई, प्रो.भारती गोरे, डॉ.योगेश कुमार ने वक्तव्य दिए। 'हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध' विषय आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ.पद्माप्रिया ने तथा 'हिंदी कविता के बदले तेवर : शमशेर' पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ.आशा मेहता ने की। सुविख्यात कवि तथा नागपुर मंडल के कमिश्नर अनूप कुमार ने 'मुक्तिबोध की साहित्यिक दृष्टि' पर कहा कि मुक्तिबोध का प्रभाव हिंदी समाज की चेतना में आज भी जीवित है। 'कवि मुक्तिबोध का मनोलोक और इंद्रिय बोध' विषय पर आयोजित सत्र में डॉ.विनय कुमार, डॉ. वंदना खुशलानी, डॉ.एम. श्याम राव, डॉ.पद्मप्रिया, डॉ.रमेश कुमार, डॉ. रूपेश कुमार सिंह ने विचार व्यक्त किए।

'बालरंग' कार्यशाला

बालरंग कार्यशाला के उद्घाटन पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने बच्चों को संदेश देते कहा कि हँसते–खेलते हुए जीवन का आनंद लेना चाहिए। अपनी प्रतिभाओं को निखारने के लिए शिक्षा के अलावा नाचना, गाना, मस्ती करना भी जीवन को सम्पन्न बनाता है। विश्वविद्यालय के जनसंपर्क कार्यालय, प्रदर्शनकारी कला विभाग, युवक बिरादरी तथा नीलकंठ अकादमी ऑफ सोशल एक्टिविटी, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में 12 दिवसीय 'बालरंग' नाट्य, नृत्य एवं कला प्रशिक्षण कार्यशाला का शानदान उद्घाटन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र और श्रीमती माधुरी मिश्र ने फीता काटकर किया। कार्यशाला में 50 से अधिक बच्चे शामिल हुए। कार्यशाला के प्रति बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था। 05 से 15 वर्ष आयुवर्ग के बच्चों ने शुरूआत में ही मस्ती की और नृत्य, नाटक और कला का भरपूर आनंद लिया। इस अवसर पर बच्चों को नाटक, नृत्य और चित्रकला का प्रशिक्षण सुरभि विप्लव, मेघा देशमुख, मेघा आचार्य, विष्णु कुमार और शिव कुमार ने दिया। कार्यक्रम का संचालन आयोजक बी.एस. मिरगे ने किया।

प्रो. मनोज कुमार बने शिक्षक संघ के अध्यक्ष

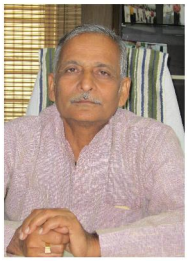

विश्वविद्यालय में हुए शिक्षक संघ के चुनाव में निर्वाचित/निर्विरोध चुने गए सदस्यों की सूची निम्नवत है :–
अध्यक्ष : प्रो. मनोज कुमार, उपाध्यक्ष : डॉ. अवंतिका शुक्ला, महासचिव : डॉ. अमित राय, कार्यकारिणी सदस्य : डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. हरप्रीत कौर, डॉ. हिमांशु शेखर डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, संयुक्त सचिव : डॉ. वीरेन्द्र प्रताप यादव और डॉ. परिमल प्रियदर्शी।

प्रो. मोदी बने भा.गां.अ.स. के उपाध्यक्ष

विश्वविद्यालय के गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी भारतीय गांधी अध्ययन समिति के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुने गए हैं। यह समिति गांधीजी के जीवन मूल्यों और दर्शन के विविध पहलुओं पर विमर्श करने के लिए देश भर में संगोष्ठी, कार्यशालाओं का आयोजन करती है। गौरतलब है कि प्रो. मोदी को आई.सी.एस.एस.आर, नई दिल्ली द्वारा 'इम्पैक्ट ऑफ द पॉलिसी ऑफ लिब्रलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन एण्ड ग्लोबेलाइजेशन ऑन डोमेस्टिक वायलेंस : फोकस ऑन द माइग्रेंट फॅमिलीज फ्रॉम बिहार टू दिल्ली, नोएडा एण्ड गुडगांव' विषय पर वृहत शोध परियोजना प्रदान की गई थी।

वार्षिक खेल–कूद महोत्सव

विश्वविद्यालय के ध्यानचंद क्रीड़ा संकुल में वार्षिक खेल–कूद महोत्सव का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने महोत्सव का शुभारंभ किया। वार्षिक खेल–कूद महोत्सव में महिलाओं की क्रिकेट मैच में शिक्षा विद्यापीठ की महिला टीम 'रॉयल' ने 'उड़ान' टीम पर 75 रनों से अपनी जीत हासिल की। 12 ओवरों का मैच रॉयल टीम एवं उड़ान टीम के बीच खेला गया। मैच के दौरान खेल प्रभारी डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, सह–खेल प्रभारी, डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा, कोच रवि कुमार, डॉ. भरत कुमार पंडा, कमेंटेटर के रूप में डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, राम सिंह, शैलेश यादव, करूणेश गौतम, गोपाल राम तथा आशीष कुमार सहित विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि पर विश्वविद्यालय के म.गां. फ्यूजी गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र तथा गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार), नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि गांधी के पूरे चिंतन को समझने के लिए 'बा' को समझना जरूरी है। कार्यक्रम के दौरान प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, साहित्यकार गिरिराज किशोर, म.गां.फ्यू.गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक दीपंकर श्रीज्ञान, लक्ष्मी दास, बसंत भाई, स्त्री विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने विचार व्यक्त किए। दीपंकर श्रीज्ञान ने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय का परिसर अति सुंदर है। यहां पर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से 'बा' और 'बापू' को समझने के लिए एक 'इंटरप्रिटेशन सेंटर' शुरू किया जाना चाहिए। 'बा और बापू' की डेढ़ सौवीं जयंती का कार्यक्रम इस विश्वविद्यालय के सहयोग से पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

अभिषेक की फिल्म को सांत्वना पुरस्कार

विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग से संबद्ध अभिषेक त्रिपाठी द्वारा मानवाधिकार आयोग के फ़िल्म प्रतियोगिता के लिए शुद्ध हवा, पर्यावरण के अधिकार को लेकर निर्मित फिल्म को 'महाराष्ट्र पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड' के फ़िल्म प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मुंबई में आयोजित एक समारोह के दौरान मुख्यमंत्री ने विजेताओं को सम्मानित किया। फिल्म निर्माण के लिए प्रेरणा देने वाले कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के प्रति अभिषेक त्रिपाठी ने आभार व्यक्त किया है।

राज्यस्तरीय उत्कर्ष स्पर्धा में विवि की सहभागिता

राष्ट्रीय सेवा योजना, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार और सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय की ओर से 26 फरवरी से 1 मार्च के दौरान आयोजित नौवीं राज्यस्तरीय उत्कर्ष सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय ने पहली बार अपनी सहभागिता कर सभी प्रतियोगिताओं में अपनी शानदार प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वासुदेव गाड़े, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रभाकर देसाई, विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी बी.एस. मिरगे सहित महाराष्ट्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों के समन्वयक एवं कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित थे। इस स्पर्धा में कुल 18 विश्वविद्यालयों के 400 विद्यार्थी सहभागी हुए थे, जिसमें हिंदी विवि की राष्ट्रीय सेवा योजना के 18 स्वयंसेवकों ने सहभागिता की। सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय के परिसर में आयोजित चार दिवसीय भव्य स्पर्धा में हिंदी विवि के विद्यार्थियों ने फोटोग्राफी, भारतीय लोककला, समूहगीत, वक्तृत्व, पथनाट्य, पोस्टर, कविता, निबंध तथा पथसंचलन आदि स्पर्धाओं में सक्रिय सहभागिता की।

'दीनानाथ की चक्की' पुस्तक पर चर्चा

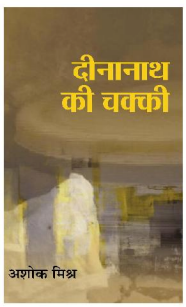

नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला के लेखक मंच पर विवि के संपादक अशोक मिश्र की प्रकाशित कहानी संग्रह 'दीनानाथ की चक्की' पर चर्चा गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कवि आलोचक रघुवंश मणि, कथाकार संजीव, कथाकार महेश कटारे, युवा कथाकार विवेक मिश्र, कथाकार राजकुमार राकेश ने विचार व्यक्त किए। कवि लीलाधर मंडलोई ने प्रकाशित कहानी संग्रह के लिए लेखक को बधाई दी।

'महिला अधिकार संरक्षण : भारत और जर्मनी के मॉडल' पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय के म.गां.फ्यू.गु.स.कार्य अध्ययन केंद्र, मातृ सेवा संघ समाज कार्य संस्थान, नागपुर, म्युअर मेमोरियल हॉस्पीटल, नागपुर तथा फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी के संयुक्त तत्वावधान में 'महिला अधिकार संरक्षण : भारत और जर्मनी के मॉडल' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान म.गां.फ्यू.गु.स. कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो.मनोज कुमार ने कहा कि मुझे पुरुषों की बराबरी नहीं करनी है और न ही मुझे पुरुष बनना है। मैं महिला हूँ और मैं महिला ही रहना चाहती हूँ। इसका अर्थ यह नहीं है कि मुझे किसी भी मायने में पुरुषों से छोटा ही या कमतर आंका जाए। कमोबेश दुनिया के सभी देशों में महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण नीति आज भी कायम है। आज इस बात की आश्यकता है कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन किया जाए। अकादमिक सत्र में मातृ सेवा संघ समाज कार्य संस्थान, नागपुर के प्राचार्य डॉ.जॉन मीनाचेरी ने 'महिलाओं की सुरक्षा के लिए भारत के विशेष प्रयास', फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी के डॉ. एलेक्जेंड्रा कॅसपरी ने 'महिलाओं की सुरक्षा के लिए जर्मनी के विशेष प्रयास', डॉ. ज्योति निसवाडे ने 'भारत में घरेलू हिंसा को कम करने के लिए सामाजिक कार्य हस्तक्षेप', फ्रैंकफर्ट विवि, जर्मनी के मरिएन्ना गांजे और एमीने जेटुओनी ने 'जर्मनी में घरेलू हिंसा को कम करने के लिए सामाजिक कार्य हस्तक्षेप', विलास शेंडे ने 'भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकारों का संरक्षण', फ्रैंकफर्ट विवि, जर्मनी के जेसिका सेपिल व यहारिया गुटएररेज ने 'जर्मनी में महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकारों का संरक्षण', डॉ.विजय प्रताप तिवारी ने 'महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा में भारत के सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका', रा.तु.म. नागपुर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के डॉ.विकास जांभूलकर ने 'भारत में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व : एक मानव अधिकार परिप्रेक्ष्य' और फ्रैंकफर्ट विवि, जर्मनी के अनाटेसिया ग्लूथ व ऐमिली वेगेनर ने 'जर्मनी में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व' विषय पर विचार व्यक्त किए। समापन समारोह में एडवोकेट ढगे ने महिला अधिकार से संबंधित विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। म्युअर मेमोरियल हॉस्पीटल, नागपुर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में लंदन से आए प्रतिनिधियों सहित 150 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए जिसमें अध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थी शामिल हुए।

समाज के साथ संवाद का प्रभावी माध्यम है पत्रकारिता : प्रो. गिरीश्वर मिश्र

पत्रकारिता और समाज पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग की ओर से 'पत्रकारिता और समाज' विषय पर 10 एवं 11 अप्रैल को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विवि के कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि समाज के साथ संवाद के लिए पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण और प्रभावी माध्यम है। देश और समाज की अनेक चिंताओं तथा जटिलताओं के साथ यह पेशा छुरे की धार पर चलने वाला है। ऐसे में संतुलन बनाकर चलना संपादकों के लिए एक बड़ी चुनौती है। मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अध्यक्ष प्रो.मनोज कुमार ने स्वागत भाषण दिया। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ.कृपाशंकर चौबे, प्रो.अरूण कुमार त्रिपाठी, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो.के.के.सिंह, दैनिक भास्कर, नागपुर के संपादक मणिकांत सोनी ने पत्रकारिता के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला। समापन समारोह में बतौर मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने कहा कि पत्रकारिता में बड़ी तीव्र गति से बदलाव आ रहा है। इस दौर में मीडिया नए उपकरणों के साथ आगे बढ़ रहा है। कहा जा सकता है कि पत्रकारिता हमारे सामने एक नए कलेवर लेकर उपस्थित हो रही है। समापन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो.मिश्र ने की। 'पत्रकारिता का भविष्य और भविष्य की पत्रकारिता' विषयधारित सत्र में वरिष्ठ संपादक एस.एन. विनोद, दैनिक तरुण भारत के पूर्व संपादक, वरिष्ठ पत्रकार तथा विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद के सदस्य सुधीर पाठक, लोकमत समाचार के वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन आर्य, दैनिक अमर उजाला के संपादक कल्लोल चक्रवर्ती ने विचार व्यक्त किए।

हिंदी संवर्धन के लिए हिंदी शिक्षण-अधिगम केंद्र की नई पहल

विश्वविद्यालय के हिंदी शिक्षण–अधिगम केंद्र (टी.एल.सी.एच.एस.) अपने सफल एवं सार्थक प्रयासों द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार में न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी हिंदी को व्यापक बनाने की दिशा में अभिनव एवं भविष्योन्मुखी कदम बढ़ा रहा है। विश्वविद्यालय में टी.एल.सी.एच.एस. की स्थापना वर्ष 2015 में 'पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षा अभियान', मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तहत की गई है। टी.एल.सी.एच.एस. द्वारा दस से भी अधिक संगोष्ठी/सम्मेलन तथा कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी भाषा को व्यापक बनाने का कार्य कर रहा है। यह सभी कार्य मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार संचालित है। इसको सुचारू रूप से चलाने हेतु मंत्रालय की डॉ.पूर्णिमा त्रिपाठी (सह–सलाहकार, मा.सं.वि.मं. भारत सरकार) ने विश्वविद्यालय में टी.एल.सी.एच.एस. द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी ली। इस दौरान प्रो. गिरीश्वर मिश्र (कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा), प्रो. अरबिंद कुमार झा (निदेशक, टी.एल.सी.एच.एस.), प्रो. के. के. सिंह (संयुक्त निदेशक, टी.एल.सी.एच.एस), डॉ.गोपाल कृष्ण ठाकुर तथा डॉ.अशोक नाथ त्रिपाठी (एसोशिएट डायरेक्टर) आदि के साथ चर्चा सत्र और साथ ही 'एस.पी.एस.एस. सॉफ्टवेयर के माध्यम से आंकड़ों का विश्लेषण' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रो.एस.के.त्यागी (डीन ऑफ़ एजुकेशन, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इंदौर), डॉ.पी.मोहनराजू (दिल्ली विश्वविद्यालय) तथा डॉ. पूर्णिमा त्रिपाठी ने मार्गदर्शन किया।

समझौता पत्र पर हस्ताक्षर

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के साथ विभिन्न परियोजनाओं को संचालित किए जाने हेतु समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए गए।

राकेश मिश्र को कृष्ण प्रताप कथा सम्मान

कहानीकार राकेश मिश्र को उनके दूसरे कथा संग्रह 'लाल बहादूर का इंजन' के लिए वर्ष 2016 का कृष्ण प्रताप स्मृति कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। 14 अप्रैल को रामानंद सरस्वती पुस्तकालय जोहकरा, आज़मगढ़ में हुए सम्मान समारोह में उन्हें शॉल, प्रशस्ति पत्र और सम्मान राशि देकर सम्मानित किया गया।

पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कबीर हिल पर वृक्षारोपण किया तथा पर्यावरण का संदेश देने वाले दो भित्ति चित्रों का लोकार्पण इस अवसर पर किया गया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर को और भी हराभरा करने के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाए जाएंगे तथा बरसात के पानी के संचय के लिए अभियान शुरू किया जाएगा।राष्ट्रीय सेवा योजना की विश्वविद्यालय की इकाई और पर्यावरण क्लब की ओर से आयोजित कार्यक्रम में डॉ. राजेश्वर सिंह, डॉ. अमित विश्वास, ब्रिजेश पाटिल, राजेश लेहकपुरे, बी. एस. मिरगे, डॉ. राजेंद्र मुंढे, राजदीप राठौर, विजयपाल पाण्डे, राजेंद्र घोडमारे, सुरभि विप्लव सहित विश्वविद्यालय के कर्मी, विद्यार्थी व शहर के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

बाबासाहब के संघर्ष से प्रेरणा लें विद्यार्थी : कुलपति प्रो. मिश्र

भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अंबेडकर की 126 वीं जयंती के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बतौर अध्यक्ष कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि डॉ. अंबेडकर का जीवन, संघर्ष एवं कठिनाइयों से भरा रहा। उन्होंने कड़ी मेहनत और अभ्यास के साथ विद्वता हासिल कर देश और समाज को एक नई दृष्टि दी। डॉ. अंबेडकर की सोच और उनके कार्यों की प्रेरणा लेकर विद्यार्थियों ने आगे बढ़ना चाहिए। मुख्य वक्ता पत्रकार और चिंतक प्रो. अरुण कुमार त्रिपाठी ने गांधी–अंबेडकर के संबंध पर अपनी बात रखी। उन्होंने गांधी–अंबेडकर को सदी के महानायक की संज्ञा देते हुए कहा कि दोनों के बीच में कई बार वैचारिक संघर्ष होता है, और कई चार समझौता। गोलमेज परिषद व अन्य प्रसंगों का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि इन घटनाओं ने भारतीय सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर उथल–पुथल मच गई थी। उनके बीच के इन गंभीर टकराव की गूंज आज भी सुनाई देती है। प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने डॉ. अंबेडकर के जीवन में अनेक प्रेरणास्पद उदाहरण बताए। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया। विवि के डॉ. भदंत कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के प्रभारी निदेशक डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने स्वागत वक्तव्य दिया। संचालन मराठी विभाग के प्रभारी अध्यक्ष डॉ. शैलेश मरजी कदम ने तथा जनसंपर्क अधिकारी बी.एस. मिरगे ने आभार माना। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, कर्मी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय शिविर में विश्वविद्यालय की सहभागिता

भाईचारा और सद्भावना का संदेश पूरे विश्व में पहुंचाने के उद्देश्य से गुरु गोविंद सिंह के 350 वें प्रकाश उत्सव के बहाने विगत 21 से 26 जनवरी के दौरान पटना, बिहार में राष्ट्रीय युवा योजना की ओर से अंतरराष्ट्रीय युवा शिविर का आयोजन किया गया। गांधीवादी विचारक, समाजसेवी डॉ.एस.एन. सुब्बाराव के नेतृत्व में इस शिविर में बांग्लादेश एवं नेपाल के प्रतिनिधियों के साथ भारत के 15 राज्यों के 300 से अधिक प्रतिनिधि पटना में एकत्रित हुए। इस शिविर में महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा के राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थियों ने किया। विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी बी.एस. मिरगे तथा शिक्षा विद्यापीठ की सहायक प्रोफेसर डॉ.शिवा शुक्ला के नेतृत्व में 9 विद्यार्थियों का दल इस शिविर में शामिल हुआ। विद्यार्थियों ने शिविर में आयोजित रक्तदान, स्वच्छता अभियान, सामाजिक सद्भावना संदेश रैली, भाषा शिक्षण कक्षा, नृत्य प्रशिक्षण, भारत की संतान और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागिता की।

प्रो. झा की आस्ट्रेलिया व अमेरिका यात्रा

विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिन्द कुमार झा ने 14–16 फरवरी को पश्चिमी विश्वविद्यालय, सिडनी में आयोजित उच्च शिक्षा शिक्षण एवं अधिगम परियोजना में सहभागिता की। साथ ही इनका चयन प्रतिष्ठित फुलब्राइट फेलोशिप के लिए हुआ है। इस छात्रवृत्ति के अंतर्गत प्रो. झा ने अमेरिका के विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के शिक्षा संस्थानों के शैक्षिक, अकादमिक गतिविधियों एवं अधिगम संस्कृति का अध्ययन व अवलोकन किया।

योग कार्यशाला

विश्वविद्यालय में युवा विकास केंद्र के तत्त्वावधान में 05–11 मार्च को 'योग के द्वारा व्यक्तित्व विकास' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में 50 चयनित विद्यार्थियों ने भाग लिया और तनाव नियंत्रण, स्मृति–वर्धन, अवसाद दूर करने आदि से संबंधित अनेक यौगिक तकनीकों का ज्ञान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त योग के माध्यम से किस तरह से समग्र व्यक्तित्व का विकास किया जाए इस पर भी सैद्धांतिक और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया। कार्यशाला का संचालन पतंजलि योग समिति के योग शिक्षकों द्वारा किया गया। विवि के युवा विकास केंद्र के प्रभारी डॉ. अरुण प्रताप सिंह ने बताया ने भी मार्गदर्शन किया।

कविता कार्यशाला

विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आयोजित कविता कार्यशाला में अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के वरिष्ठ आचार्य तथा कवि दिनेश कुशवाह ने कहा कि किसी भी कवि के लिए कविता की परिभाषा बताना कठिन है। यह वैसे ही है जैसे कोई मछली से पूछे कि पानी क्या है। उन्होंने अपने कविता संग्रह–'इसी काया में मोक्ष' तथा 'इतिहास में अभागे' से कुछ कविताओं का पाठ किया। संचालन दास्तानगो हिमांशु वाजपेयी ने किया। अध्यक्षता प्रो. चंद्रकला पांडेय ने की। इस दौरान साहित्य समीक्षक तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो.राजश्री शुक्ला ने कहा कि कहानी लोक के पक्ष में और सत्ता के खिलाफ लड़ती है। हर युग में कहानी विधा ने यही काम किया। केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत व धन्यवाद ज्ञापन किया।

नए प्रकाशन

राजभाषा प्रदर्शनी

विश्वविद्यालय तथा मध्य रेल, नागपुर के राजभाषा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में सेवाग्राम स्टेशन पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी 'संगम' का उद्घाटन मध्य रेल के महाप्रबंधक देवेन्द्र कुमार शर्मा ने किया। विश्वविद्यालय द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में लेखकों की हस्तलिखित पाण्डुलिपियां, पत्र, समाज विज्ञान विश्वकोश, वर्धा शब्दकोश आदि प्रकाशन को देखकर सभी रोमांचित हो उठे। हिंदी भाषा के उन्नति के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर के बारे में जानकर उपस्थितों ने प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि बड़ी संख्या में विदेशी विद्यार्थी हिंदी अध्ययन करने के लिए हमारे यहां आ रहे हैं। सहायक संपादक डॉ. अमित विश्वास व लीला प्रभारी गिरीश चंद्र पाण्डेय ने पीपीटी के माध्यम से विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह विश्वविद्यालय हिंदी को तकनीक और प्रौद्योगिकी की भाषा बनाने की दिशा में प्रयासरत है। प्रदर्शनी में खास आकर्षण था रेलवे कर्मी का गांधी बनना। इस अवसर पर सांसद रामदास तडस, मध्य रेल के मख्य राजभाषा अधिकारी एस.के. कुलश्रेष्ठ, मध्य रेल, नागपुर के मंडल प्रबंधक बृजेश कुमार गुप्ता, राजभाषा अधिकारी पूर्णिमा सूरडकर, हिंदी विवि के एडजंक्ट फैकल्टी प्रो. अरुण कुमार त्रिपाठी, राजभाषा अधिकारी राजेश कुमार यादव, राजेश आगरकर, सुरेश यादव सहित बड़ी संख्या में रेलवे के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

फ्रांस में डॉ. घोष ने पढ़ा आलेख

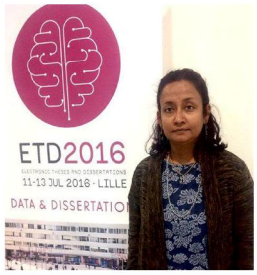

विश्वविद्यालय के महापंडित राहुल सांकृत्यायन केंद्रीय पुस्तकालय की पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मैत्रेयी घोष ने लिले, फ्रांस विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 'द रिजल्ट ऑफ एन एक्जामिनेशन्स ऑफ इलेक्ट्रॉनिक थीसिस एण्ड डिर्जेटेशन (इटीडी) कॉपीराइट पॉलीसिज एडोप्टेड बाय टेरीटरी लेवल एजुकेशनल इंस्टीट्यूट इन इंडिया' विषय पर शोध आलेख प्रस्तुत किया।

मॉरिशस में हिंदी अध्यापनरत हैं डॉ. सिंह

विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. उमेश कुमार सिंह मॉरिशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी अध्यापन करा रहे हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली द्वारा उन्हें मॉरिशस में हिंदी अध्यापन का अवसर प्रदान किया है। दलित चिंतक के रूप में ख्यातिलब्ध डॉ. सिंह की कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

अनिर्बाण घोष ने की चीन की यात्रा

विश्वविद्यालय के चीनी भाषा के सहायक प्रोफेसर अनिर्बाण घोष ने 08–30 जून को चीन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता की। इस दौरान 'इंटरनेशनल स्टूडेंट एक्सचेंज', 'प्रिंसिपल्स एण्ड प्रैक्टिसेज इन कल्टीवेशन स्पेशिएलिस्ट ऑफ ह्यूमेनिटीज एण्ड सोशल साइंस इन चाइना', 'सर्वे एबाउट चाइना' सहित मानविकी एवं समाज विज्ञान के विविध पहलुओं पर विमर्श किया जा रहा है जिसमें चीन सहित कई देशों के विद्वान शिरकत कर रहे हैं। गौरतलब है कि हाल ही में म.गां.अं.हिं.वि. और चीन के पेइचिंग फॉरेन स्टडीज यूनिवर्सिटी के साथ वर्धा में ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे इससे सांस्कृतिक संबंधों में प्रगाढ़ता लाने के उद्देश्य से दोंनो विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के आदान–प्रदान, संगोष्ठी तथा कार्यशालाओं के आयोजन आदि के लिए सहमति जताई गई थी।

'आज़ादी के बाद उर्दू ग़ज़ल' पर व्याख्यान

विश्वविद्यालय के उर्दू साहित्य विभाग द्वारा नातिक गुलाहटी मेमोरियल लेक्चर का आयोजन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में किया गया। राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद के निदेशक और उर्दू उपन्यास आलोचक प्रो. इर्तेज़ा करीम ने बतौर मुख्य वक्ता कहा कि उर्दू ग़ज़ल हर दौर की समस्याओं को सम्प्रेषित करने की क्षमता रखती है। मानवता, भाईचारा, समरसता, आपसी सहयोग की भावना विकसित करने में ग़ज़ल ही एक ऐसी विधा है जो सबसे ज्यादा कारगर भूमिका निभाती रही है। ग़ज़ल को समझने के लिए शायर के दर्द को समझना आवश्यक है। साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने स्वागत वक्तव्य दिया। सहायक प्रोफेसर डॉ. रग़बत शमीम मलिक ने संचालन किया। उर्दू साहित्य विभाग के प्रभारी अध्यक्ष डॉ. हिमांशु शेखर ने स्वागत वक्तव्य दिया।

तबस्सुम को युवा कथा पुरस्कार

विश्वविद्यालय की शोध छात्रा चर्चित युवा कथाकार हुस्न तबस्सुम निहाँ को पहला डॉ. विजयमोहन सिंह पुरस्कार प्रदान किया गया है। उनके सृजनात्मक कथा लेखन और हिंदी साहित्य एवं भाषा के प्रति निष्ठा और प्रतिबद्धता को देखते हुए यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस उपलब्धि पर हुस्न तबस्सुम निहाँ को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा एवं कुलसचिव डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र सहित अध्यापक, कर्मियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने बधाई दी।

अज्ञेय स्मरण

विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग द्वारा आयोजित अज्ञेय स्मरण कार्यक्रम में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि अज्ञेय ने हिंदी साहित्य के हर विधा में लेखन कर हिंदी साहित्य में अहम योगदान दिया है। उनके ललित निबंध, उपन्यास, कविता एवं संपादक के रूप में लिखे आलेख हिंदी साहित्य एवं पत्रकारिता को नया आयाम देने वाले हैं। इस अवसर पर अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो.देवराज, भाषा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल एवं साहित्य विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो.के.के. सिंह ने अज्ञेय रचित साहित्य के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला। साहित्य विद्यापीठ की एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. प्रीति सागर ने संचालन किया तथा सहायक प्रोफेसर एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बीर पाल सिंह यादव ने आभार व्यक्त किया।

सामुदायिक सहभागिता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व पर कार्यशाला

विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, हैदराबाद (एनसीआरआई) के संयुक्त तत्वावधान में 'सामुदायिक सहभागिता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व' पर रणनीति निर्माण विषय पर आयोजित दो दिवसीय (26–27 मार्च) कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि, गाँवों की शक्ति को पहचान कर उनकी अच्छाई और प्रेरक प्रयोगों को आधुनिक समय के विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा सामने लाने चाहिए ताकि ऐसे उदाहरण दूसरों के लिए प्रेरणा का कारण बन सकें। कार्यक्रम में राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद के सदस्य सचिव डॉ.आर. मनोज कुमार, परिषद के वरिष्ठ परामर्शदाता जे.एल. चौधरी, म.गां.फ्यू.गु.स.कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक, नोडल अधिकारी प्रो.मनोज कुमार ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद, हैदराबाद और विश्वविद्यालय के बीच ग्रामीण विकास को लेकर एक कृतिशील योजना के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए। कार्यशाला में सहभागी अध्यापक, अधिकारी एवं शोधार्थियों ने छह पाठ्यक्रमों (जनसंचार, समाज कार्य, विकास एवं शांति अध्ययन तथा स्त्री अध्ययन, मानव विज्ञान तथा पर्यावरण) का प्रारूप तैयार कर संस्थान को सौंपा है। सभी पाठ्यक्रमों के केंद्र में गाँवों का विकास, रोज़गार की संभावनाएँ, ग्राम उद्योग, ग्रामीण सामुदायिक संचार जैसे विषयों को शामिल किया गया है। कार्यशाला के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा ने की तथा इस दौरान डॉ.आर. मनोज कुमार, जे.एल. चौधरी, प्रो.मनोज कुमार, महारोगी सेवा समिति वर्धा के सदस्य तथा एमगिरी के पूर्व निदेशक प्रो.टी. करूणाकरन बतौर वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

गांधी विचार को प्रयोगशाला से जीवित रखना जरूरी : सर्वोदय प्रसाद

गांव के विकास का विकल्प गांधी मॉडल में है। गांधी के ग्रामीण विकास के मॉडल को अपनाकर प्रयोगशाला के माध्यम से उनके विचारों को जीवित रखने की आवश्यकता है। उक्त मत सुप्रसिद्ध गांधीवादी विचारक सर्व सेवा संघ के सचिव जी.वी.वी.एस.प्रसाद, हैदराबाद ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के विकास एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान के अध्यक्ष जयवंत मठकर ने की। इस अवसर पर विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ.नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने भी संबोधित किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का विहंगम दृश्य

विश्व रंगमंच दिवस मनाया गया

मैकबैथ, अंधेर नगरी, इडिपस, दूतवाक्यम्, आदिम रंगमंच नाटकों का मंचन

विश्व रंगमंच दिवस पर विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग की ओर से आयोजित समारोह में शेक्सपीयर के मैकबैथ, भारतेंदु हरिश्चंद्र के अंधेर नगरी, ग्रीक के इडिपस, भास के दूतवाक्यम् व आदिम रंगमंच जैसे नाटकों का विद्यार्थियों की प्रस्तुति ने यादगार बना डाला। नाट्य प्रस्तुतियों की परिकल्पना, समन्वय एवं निर्देशन सहायक प्रोफेसर सुरभि विप्लव तथा निर्माण एवं संयोजन सहायक प्रोफेसर डॉ.सतीश पावड़े ने किया। नाट्य मंचन के अवसर पर कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, डॉ. उषा शर्मा, साहित्य विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो.के.के. सिंह सहित अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

विदेशी विद्यार्थियों के लिए पुस्तक

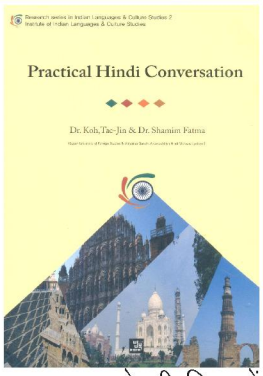

विश्वविद्यालय ने हिंदी सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों के लिए 'प्रैक्टिकल हिंदी कन्वर्सेशन' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की है। यह पुस्तक विश्व में हिंदी की पहुंच को आसान बनाने की दिशा में मील का पत्थिर साबित होगी, ऐसा विश्वास विश्वविद्यालय के सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्र के सहायक प्रोफेसर एवं लेखिका डॉ. शमीम फ़ातमा ने व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, साउथ कोरिया और हिंदी विश्वविद्यालय के संयुक्त प्रयास से इस पुस्तक को तैयार किया गया है। बुसान विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया के प्रो. ताय जिन कोह भी इस पुस्तक के लेखक हैं।

जेंडर संवेदनशीलता पर कार्यशाला

विश्वविद्यालय में जेंडर संवेदनशीलता समिति द्वारा जेंडर संवेदनशीलता विषय पर दो दिवसीय (10–11 फरवरी) कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विवि के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि यह कार्यशाला जेंडर जागरूकता एवं संवेदनशीलता की दिशा में एक अच्छी पहल है, जिससे परिसर में जेंडर समानता के प्रति सकारात्मक माहौल का निर्माण होगा। स्वागत वक्तव्य में जेंडर संवेदनशीलता समिति की संयोजक डॉ.सुप्रिया पाठक ने विवि परिसर में जेंडर संवेदनशीलता एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशन में गठित जेंडर चैंपियंस की महत्ता पर बात रखी। इस दौरान निरंतर संस्था, नई दिल्ली की पुर्णिमा गुप्ता ने संबोधित किया।

चीन, थाईलैण्ड के विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान

विश्वविद्यालय में अध्ययनरत चीन और थाईलैण्ड के विद्यार्थियों को 'अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम' के प्रमाण पत्र कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा प्रदान किए गए। भाषा विद्यापीठ के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. देवराज, डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय, डॉ. शोभा पालीवाल, डॉ. अनिल कुमार दुबे, के.के. त्रिपाठी, डॉ. राजीव रंजन राय, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, डॉ. धनजी प्रसाद, बी.एस. मिरगे आदि के साथ चीन एवं थाईलैण्ड के विद्यार्थी उपस्थित थे।

परिसर विकास (भवन का कार्य पूर्णता की ओर)

अकादमिक भवन (श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवन)

दूर शिक्षा निदेशालय (पं. मदन मोहन मालवीय भवन)

छाया : डॉ. राजेश्वर सिंह, सहायक कुलसचिव, परिसर विकास

'गांधी दर्शन एवं ग्रामीण विकास' पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

विश्वविद्यालय के म.गां.फ्यू.गु.स.कार्य अध्ययन केंद्र तथा मा.सं.वि.केंद्र, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में गांधी स्मृति दर्शन समिति, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 'गांधी दर्शन एवं ग्रामीण विकास' विषय पर आयोजित 21 दिवसीय (9 फरवरी–1 मार्च) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि नई पीढ़ी को गांधी विचार एवं दर्शन का परिचय कराना जरूरी है। इस दौरान प्रो. नंदकिशोर आचार्य, पं. सुंदरलाल शर्मा खुला विश्वविद्यालय, बिलासपुर के कुलपति प्रो.बी. जी. सिंह, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के निदेशक डॉ. नंदकिशोर पांडे, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, म.गां.फ्यू.गु.समाज का.अ. केंद्र के निदेशक व पाठ्यक्रम के संयोजक प्रो. मनोज कुमार ने संबोधित किया। 101 घंटे चले विमर्श में प्रो.नंदकिशोर आचार्य ने 'अहिंसा का दार्शनिक आधार' तथा 'गांधीय आर्थिक सिद्धांत', प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने 'ग्राम विकास की शोध प्रविधि', 'यथार्थ आधृत सिद्धांत', एस.एन. सुब्बाराव ने 'गांधी कैसे गांधी बने', अरुण कुमार त्रिपाठी ने 'वैश्वीकरण की वर्तमान चुनौतियां' तथा 'गांधी की संचार दृष्टि', प्रो. आर.पी. द्विवेदी ने 'सात सामाजिक पाप का सामाजिक विश्लेषण', प्रो. रामजी सिंह ने 'सत्याग्रह संघर्ष और सेवा', 'भूमंडलीकरण और गांधी', 'गांधी के बाद गांधी विचार', प्रो.मनोज कुमार ने 'समकालीन चुनौतियाँ और गांधी दर्शन', प्रो.एस.एन. पांडे ने 'गांधी और तुलसी', प्रो.पी.सी. जोशी ने 'आपदा और ग्रामीण विकास', प्रो.अवधेश प्रधान ने 'गांधी की विकास दृष्टि', 'गांधी की सौंदर्य दृष्टि', 'गांधी की भाषा दृष्टि, प्रो.आनंद कुमार ने 'गांधी की दिशा और हमारा राष्ट्र निर्माण–कुछ अंतर्विरोध, कई संभावनाएं', '21वीं सदी के भारतीय किसानों के सवाल और गांधी का ग्राम स्वराज', 'चंपारण से शुरु एक प्रतिरोध पद्धति के सौ बरस', प्रो.टी. करुणाकरन ने 'वर्तमान आर्थिक विकास की चुनौतियाँ एवं गांधी विमर्श', प्रो.परमानन्द सिंह ने 'विकास का विभ्रम और गांधीय विकल्प', 'आर्थिक विकास का गांधीवादी प्रतिमान', 'किन्स का क्रांतिकारी अर्थशास्त्र, वैश्वीकरण और गांधी', लक्ष्मीदास ने 'सहकारिता और गांधी', डॉ.वी. मिश्रा ने 'सूक्ष्म योजना एवं परियोजना निर्माण' एवं 'ग्रामीण विकास के लिए परियोजना कैसे बनाएं', प्रो.प्रदीप देशमुख ने 'साहित्य पुनरावलोकन', डॉ.जॉन मीनाचेरी ने 'शोध पद्धति और शोध उपकरण' तथा 'ग्रामीण विकास शोध', प्रो.अजीत कुमार ने 'ग्राम विकास की सैद्धांतिकी' तथा 'ग्राम विकास के अंतर्विरोध', प्रो.पी.वी. सेनगुप्ता ने 'समाज कार्य की सैद्धांतिकी', डॉ.शुक्ला मोहंती ने 'कृषि एवं ग्रामोद्योग' तथा 'ग्रामीण विकास की गांधीय दृष्टि', प्रो.पूर्णिमा कुमार ने 'गांधी का राजनैतिक दर्शन' दीपंकर श्री ज्ञान ने 'अंतिम व्यक्ति का सत्य', प्रो.विद्युत चक्रवर्ती ने 'गांधी की संकल्पनात्मक समझ' तथा 'ग्रामीण विकास की गांधीय दृष्टि', प्रो. दीपक मलिक ने 'गांधी का मार्क्सवादी विश्लेषण', प्रो.आनंद प्रकाश ने 'सहभागी शोध प्रविधि' तथा 'आख्यान विश्लेषण विधि', प्रो. अभय मुडे ने 'ग्रामीण विकास एवं स्वास्थ्य', प्रो.शंभू गुप्त ने 'साहित्य में गांधी', प्रो.आनंद वर्धन शर्मा ने 'यंग इंडिया एवं गांधी साहित्य', डॉ.गोपाल कृष्ण ठाकुर ने 'गांधी एवं शिक्षा दर्शन', डॉ.नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने 'दक्षिण अफ्रीका में गांधी', डॉ.गिरिराज किशोर ने 'ट्रस्टीशिप', बसंतभाई ने 'ग्राम विकास और गांधी के प्रयोग', जे.एल.चौधरी ने 'सामुदायिक विकास एवं गांधी दर्शन', अशोक कुमार ने 'गांधी दर्शन तथा ताना भगत' तथा 'पंचम अनुसूची के पालन की वास्तविकता', और डॉ. एम.एल. कासारे ने 'ग्राम विकास में गांधी और अंबेडकर की देन' विषय पर विचार व्यक्त किए। समापन सत्र के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में कनेरी मठ के प्रमुख स्वामी काट सिद्धेश्वर महाराज ने भारतीय संस्कृति पर गहराते संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज देश स्वतंत्र है लेकिन घर व समाज परतंत्र हो गया है। अध्यक्षता विनोबा भावे के सहयोगी सर्वोदयी कार्यकर्ता बाल विजयभाई ने की।

शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला

विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए 'शिक्षा से जुड़े समसामयिक विषय' पर आयोजित छह दिवसीय (31 मई से 5 जून तक) राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में अध्यक्षीय वक्तव्य में विवि के कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि अध्यापक को मनुष्य बनाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है। वर्तमान समय के शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धि का होना बहुत आवश्यक है, प्रत्येक विद्यार्थी अद्वितीय होता है इसलिए शिक्षकों को व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर शिक्षा देनी चाहिए। अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों के स्तर के अनुरुप होनी चाहिए। विद्यालय का वातावरण शिक्षा के अनुरुप होना चाहिए, पढ़ाई सिर्फ कक्षा तक सीमित नहीं होनी चाहिए। प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने शिक्षक एवं शिक्षा पर अपने अनुभवों को छात्रों के समक्ष रखा। दूर शिक्षा के निदेशक प्रो. अरबिन्द कुमार झा ने ज्ञान क्या है? इसको विस्तार से समझाया। कार्यशाला की रुप रेखा डॉ. गुणवंत सोनोने ने प्रस्तुत की। दूर शिक्षा निदेशालय की गतिविधियों पर आधारित वीडियो क्लिप रजत देशमुख ने प्रस्तुत की। आभार डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने किया तथा संचालन डॉ. समीर कुमार पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रवीन्द्र बोरकर एवं डॉ. एम. एम. मंगोड़ी, सहायक कुलसचिव विनोद वैद्य, डॉ. अमित राय, शैलेश मरजी कदम, डॉ. अमरेंद्र शर्मा, अरविन्द कुमार, गुड्डु यादव, सचिन सोनी, उपस्थित थे। कार्यशाला में देशभर के 400 से अधिक शिक्षक सहभागी हुए।

विश्वविद्यालय : वेबसाइट एवं ब्लॉग

www.hindivishwa.org
www.hindisamay.com
www.mediasamay.com
www.blogsamay.com
www.archive.hindivishwa.org
www.hindipremi.blogspot.com
www.nirvachan.blogspot.com
www.ccmswardha.wordpress.com
www.ullaasmgahv.blogspot.in
www.dswmgahv.blogspot.com
www.diasporamgahv.webs.com

संरक्षक
प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति
प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति
सलाहकार
श्री क़ादर नवाज़ ख़ान, कुलसचिव
संपादक
डॉ. अमित कु. विश्वास बी. एस. मिरगे
आकल्पन
राजेश आगरकर
सहयोग
राजदीप राठौर
प्रकाशक
राजेश कुमार यादव
प्रकाशन प्रभारी
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त)
गांधी हिल्स, वर्धा–442 001 (महाराष्ट्र) भारत
ई–मेल : mgahvpro@gmail.com